Gyanvividha, Vol.-2; Issue-1 (January-March) 2025 : PP-242-247

ज्ञानविविधा

कला, मानविकी और सामाजिक विज्ञान की सहकर्मी-समीक्षित, मूल्यांकित, त्रैमासिक शोध पत्रिका

ISSN : 3048-4537(Online)
3049-2327(Print)
IIFS Impact Factor-2.25
Vol.-2; Issue-1 (Jan.March) 2025
Page No.- 242-247
DOI :-10.71037/gyanvividha.v2i1.40
©2025 Gyanvividha
www.journal.gyanvividha.com

Monika parihar
PhD Scholar, Department of Hindi,
Saurashtra university rajkot (Gujrat).

Corresponding Author :

Monika parihar
PhD Scholar, Department of Hindi,

हिन्दी कहानी में मध्यवर्गीय अकेलेपन का बदलता मनोविज्ञान

सारांश : यह शोध-पत्र हिन्दी कहानी में मध्यवर्गीय अकेलेपन के बदलते मनोविज्ञान की पड़ताल नई कहानी से उत्तर-आधुनिक कथा-लेखन तक करता है। इसका मूल तर्क यह है कि हिन्दी कथा-साहित्य में अकेलापन पहले पारिवारिक विघटन, दाम्पत्य की चुप्पी, नौकरी और नगर-जीवन की अनामिता से निर्मित भाव-दशा के रूप में उभरता है; पर उत्तर-आधुनिक संवेदना में वही अकेलापन स्त्री-अनुभव, देह-चेतना, स्मृति, इच्छा, आत्म-संदेह और अस्मिताबोध की जटिल संरचना बन जाता है। इस अध्ययन में वापसी, यही सच है, धूप का एक टुकड़ा, परिन्दे, मित्रो मरजानी, चित्तकोबरा और माई जैसी कृतियों को केंद्र में रखकर यह दिखाया गया है कि मध्यवर्गीय व्यक्तित्व का अकेलापन केवल सामाजिक नहीं, बल्कि गहरे मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक अर्थों में भी निर्मित होता है। शोध-विधि के रूप में निकट-पाठ, स्त्रीवादी आलोचनात्मक दृष्टि तथा मनो-सामाजिक विश्लेषण का उपयोग किया गया है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि उत्तर-आधुनिक हिन्दी कथा में अकेलापन अब केवल "रिक्तता" नहीं रह जाता; वह देह, भाषा, स्मृति और सत्ता-संबंधों से निर्मित अनुभव-तंत्र बन जाता है।

मुख्य शब्द : हिन्दी कहानी, मध्यवर्ग, अकेलापन, मनोविज्ञान, नई कहानी, उत्तर-आधुनिकता, स्त्री-अनुभव, देह-चेतना, दाम्पत्य, शहरी जीवन।

परिचय : हिन्दी कहानी का आधुनिक विकास वस्तुतः मध्यवर्ग के उदय, उसके अंतर्विरोधों, उसकी आकांक्षाओं और उसकी पराजयों का साहित्यिक इतिहास भी है। यह मध्यवर्ग बाहर से जितना व्यवस्थित, नैतिक, शिक्षित और संस्कारित दिखाई देता है, भीतर से उतना ही भय, असुरक्षा, कुंठा, प्रतीक्षा, स्मृति और भावात्मक अभाव से भरा हुआ है। आधुनिक जीवन ने उसे सामाजिक गतिशीलता, नौकरी, शिक्षा और नगरीय अवसर तो दिए, पर उसी के साथ संबंधों की आत्मीयता, पारिवारिक सुरक्षा और जीवन के सहज भाव-संतुलन को भी धीरे-धीरे

कमजोर किया। नई कहानी ने इसी आंतरिक टूटन को पहली बार इतने तीखे ढंग से पहचाना कि कहानी का केंद्र बाहरी घटना से हटकर व्यक्ति की मन:स्थिति, मौन, ऊब और संवेदनात्मक रिक्तता पर आ गया। इसीलिए मध्यवर्गीय अकेलापन हिन्दी कहानी में किसी एक पात्र की निजी समस्या नहीं, बल्कि पूरे सामाजिक ढाँचे की दरारों का मनोवैज्ञानिक रूप है। कथा-इतिहास के आलोचकों ने भी हिन्दी कहानी की शक्ति को इसी जीवन-सापेक्षता, यथार्थ-बोध और बदलती संवेदना में देखा है। (मिश्र, 2014; नागमणी, 2020).

नई कहानी के दौर में यह अकेलापन मुख्यतः दाम्पत्य-संबंधों की नीरवता, नौकरीपेशा जीवन की यांत्रिकता, बुज़ुर्ग होते मनुष्य की उपेक्षा और शहर के भीतर फैलती अनामिता से निर्मित होता है। उषा प्रियंवदा, मन्नू भंडारी और निर्मल वर्मा जैसे रचनाकारों ने मध्यवर्गीय जीवन के उस भीतरी अँधेरे को स्वर दिया जहाँ व्यक्ति घर में रहते हुए भी बेघर, संबंधों में रहते हुए भी असंबद्ध और स्मृतियों से भरा हुआ होते हुए भी वर्तमान में अकेला दिखाई देता है। यह अकेलापन केवल सामाजिक दूरी नहीं, बल्कि आत्मीयता के क्षरण की वह स्थिति है जिसमें मनुष्य अपने ही जीवन में अप्रासंगिक होता चला जाता है। (भंडारी, 2017; वर्मा, 2024).

प्रस्तुत शीर्षक यद्यपि “हिन्दी कहानी” पर केंद्रित है, फिर भी इस अध्ययन में उत्तर-आधुनिक हिन्दी उपन्यासों को भी सहगामी पाठ के रूप में शामिल किया गया है, क्योंकि उत्तरार्द्ध में स्त्री-अनुभव और देह-चेतना ने अकेलेपन के अर्थ को अत्यंत गहराई से बदला है। कहानी और उपन्यास, दोनों विधाओं में मध्यवर्गीय जीवन का निजी अँधेरा समान रूप से उपस्थित है; अंतर केवल यह है कि कहानी उस अँधेरे को एक तीखे प्रकाश-क्षण में पकड़ती है, जबकि उपन्यास उसे समय, देह, संबंध और स्मृति की विस्तृत परतों में खोलता है। इस दृष्टि से मित्रो मरजानी, चित्तकोबरा और माई को यहाँ कहानी-परंपरा के विस्तार के रूप में पढ़ना अधिक उपयुक्त है। इन कृतियों में स्त्री का अकेलापन केवल भावनात्मक रिक्तता नहीं रह जाता, बल्कि देह, इच्छा, मौन, घरेलू श्रम और आत्म-पहचान से जुड़ा हुआ जटिल अनुभव बन जाता है। (पचौरी, 1996; सीमा, 2019).

सैद्धान्तिक ढाँचा और शोध-विधि : इस शोध का सैद्धान्तिक आधार तीन परस्पर जुड़े स्तरों पर निर्मित है। पहला स्तर नई कहानी की आलोचनात्मक समझ से संबंधित है, जिसके अनुसार कहानी की सार्थकता केवल कथानक, घटना या शिल्प-कौशल में नहीं, बल्कि उसके वर्तमान जीवन-सापेक्ष यथार्थ-बोध में निहित होती है। नई कहानी ने व्यक्ति को समाज से काटकर नहीं, बल्कि समाज के भीतर टूटते हुए संबंधों, दाम्पत्य की नीरवता, नौकरीपेशा जीवन की यांत्रिकता और मध्यवर्गीय नैतिकता के दबावों के बीच देखा। इस दृष्टि से अकेलापन किसी रोमानी उदासी का नाम नहीं, बल्कि आधुनिक मध्यवर्गीय जीवन की संरचनात्मक विडंबना है। (सिंह, 2019; मिश्र, 2014; मधुरेश, 2018).

दूसरा स्तर उत्तर-आधुनिक विमर्श से जुड़ता है, जो व्यक्तित्व की स्थिरता, अर्थ की एकरेखीयता और नैतिक-सामाजिक महावृत्तांतों पर प्रश्न उठाता है। उत्तर-आधुनिक संवेदना में मनुष्य अब किसी निश्चित पहचान वाला पात्र नहीं रहता; वह स्मृतियों, इच्छाओं, भय, भाषा, देह और संबंधों के बीच लगातार बनता-बिखरता हुआ व्यक्तित्व है। इसी कारण हिन्दी कहानी और उत्तर-आधुनिक उपन्यासों में अकेलापन केवल बाहरी अलगाव नहीं, बल्कि आत्म के भीतर पैदा हुई दरार का अनुभव बन जाता है। व्यक्ति घर में है, पर घर से असंबद्ध है; संबंधों में है, पर संबंधों से आश्वस्त नहीं है; स्मृति में है, पर वर्तमान से संतुष्ट नहीं है। (यादव, 2010; नागमणी, 2020).

तीसरा स्तर स्त्रीवादी दृष्टि का है, जिसके माध्यम से यह अध्ययन देखता है कि मध्यवर्गीय परिवार, दाम्पत्य, नैतिकता और घरेलू मर्यादा की संस्थाएँ स्त्री-जीवन में किस प्रकार चुप्पी, अपराध-

बोध, इच्छाओं के दमन, देह के अनुशासन और आत्म-अस्वीकृति का निर्माण करती हैं। इस ढाँचे में स्त्री का अकेलापन केवल भावात्मक रिक्तता नहीं, बल्कि सत्ता-संबंधों से उपजा मनोवैज्ञानिक और सांस्कृतिक अनुभव है। मित्रो मरजानी, चित्तकोबरा और माई जैसी कृतियाँ यह स्पष्ट करती हैं कि स्त्री-देह हिन्दी कथा में केवल जैविक सत्ता नहीं रहती, बल्कि स्मृति, प्रतिरोध, इच्छा और आत्म-पहचान की सक्रिय भूमि बन जाती है। (सोबती, 2017; गर्ग, 1979; श्री, 2004).

शोध-विधि के स्तर पर यह अध्ययन निकट-पाठ और तुलनात्मक पाठ-विश्लेषण पर आधारित है। प्राथमिक सामग्री के रूप में वे कहानियाँ और उपन्यास चुने गए हैं जिनमें मध्यवर्गीय जीवन, एकांत, दाम्पत्य, स्मृति, स्त्री-अनुभव और देह-चेतना की उपस्थिति स्पष्ट है। गौण सामग्री के रूप में हिन्दी आलोचना, शोध-पत्रों और समकालीन विवेचनात्मक लेखों का उपयोग किया गया है। पद्धतिगत रूप से यह अध्ययन केवल कथा-सार प्रस्तुत नहीं करता, बल्कि भाषा, प्रतीक, मौन, मनोस्थितियों और पात्रों की सूक्ष्म क्रियाओं से मनोविज्ञान की रचना-प्रक्रिया को समझने का प्रयास करता है। इस प्रकार पाठ-समीक्षा यहाँ संवेदना-समीक्षा और सामाजिक मनोविज्ञान की व्याख्या में बदल जाती है। (प्रियंवदा, 2011).

मध्यवर्गीय अकेलेपन का बदलता मनोविज्ञान : उषा प्रियंवदा की वापसी मध्यवर्गीय अकेलेपन की आरंभिक और अत्यंत मार्मिक कथा है। गजाधर बाबू के जीवन में परिवार, नौकरी और स्मृति—तीनों के बीच जो फाँक पड़ती है, वही उनकी मानसिक विडंबना का केंद्र बनती है। कहानी का “गहन सूनापन” केवल बुज़ुर्ग होते पुरुष की उदासी नहीं, बल्कि उपयोगिता-आधारित पारिवारिक नैतिकता का उद्घाटन है। परिवार, जिसकी ओर लौटने की आकांक्षा उन्हें जीवित रखती रही, वही लौटने पर उन्हें अतिरिक्त बना देता है। इसी तरह निर्मल वर्मा की धूप का एक टुकड़ा में नायिका का यह कहना कि “जिस बेंच पर आप बैठे हैं, वह मेरी है” शहरी जीवन में स्वत्व की उस सूक्ष्म खोज को व्यक्त करता है जहाँ मनुष्य घर, संबंध और इतिहास से कटकर वस्तुओं में भी अपना अंश खोजने लगता है। एक ओर घरेलू उपयोगिता से बाहर हुआ पुरुष; दूसरी ओर नगर की खुली जगहों में चिह्न खोजती स्त्री—दोनों मिलकर मध्यवर्गीय अकेलेपन का आरंभिक मानचित्र बनाते हैं। (वर्मा, 2024; चौहान, 2016).

मन्नू भंडारी की यही सच है इस अकेलेपन को और अधिक भीतरी बनाती है। यहाँ अकेलापन खाली कमरे या खाली जीवन की देन नहीं है; वह स्मृति और वर्तमान, आश्वस्त प्रेम और अनिश्चित आकर्षण, तथा आत्म-सम्मान और भावात्मक निर्भरता के बीच फँसी हुई स्त्री-चेतना की दशा है। कहानी में दीपा जिस “रिक्तता और शून्यता” की पहचान करती है, वह प्रेम-वियोग से अधिक उस मानसिक अधर का परिणाम है जहाँ आधुनिक शिक्षित स्त्री निर्णय लेने में स्वतंत्र तो है, पर भावनात्मक रूप से पूरी तरह निर्भीक नहीं। बाद में “यह क्षण ही सत्य है” जैसी अनुभूति यह बताती है कि मध्यवर्गीय प्रेम में स्थायित्व से अधिक क्षणिक आवेग निर्णायक हो जाता है। इस कहानी का महत्व इसी में है कि यहाँ अकेलापन सामाजिक से अधिक मनो-आत्मिक और अस्तित्वगत हो जाता है। (भंडारी, 2017; यादव, 2010; नागमणी, 2020).

निर्मल वर्मा की कथा-दुनिया में यह अकेलापन सबसे सूक्ष्म और सबसे धुँधला, पर सबसे गहरा होकर उपस्थित होता है। परिन्दे के बारे में यह बात सार्थक है कि इससे हिन्दी कहानी को एक नया प्रस्थान मिला; क्योंकि यहाँ कथानक से अधिक वातावरण, संवाद से अधिक मौन, और घटना से अधिक मन:स्थिति सक्रिय है। बाद के संग्रह कव्वे और काला पानी तक आते-आते यह प्रवृत्ति और प्रखर होती है—मानवीय संबंधों में ठहराव, ऊब, अनाम उदासी और आंतरिक खालीपन कथा का मुख्य पदार्थ बन जाते हैं। इस बिंदु पर अकेलापन किसी एक पात्र की निजी टूटन नहीं, बल्कि आधुनिक मध्यवर्ग के संवेदनात्मक ढाँचे का नाम बन जाता है। वर्मा की

विशेषता यह है कि वे इस मनोदशा को चीख में नहीं, धुंध, विराम, स्मृति और हल्की कंपन में लिखते हैं। (वर्मा, 2024; सिंह, 2019; चौहान, 2016).

स्त्री-अनुभव और देह-चेतना : उत्तर-आधुनिक विस्तार में आते-आते मध्यवर्गीय अकेलापन स्त्री-देह और स्त्री-इच्छा के प्रश्न से गहरे जुड़ जाता है। कृष्णा सोबती की मित्रो मरजानी इसका सबसे सशक्त उदाहरण है। मित्रो का कथन—"मेरी इस देह में इतनी प्यास है"—हिन्दी कथा-साहित्य में स्त्री की दबी हुई यौनिकता का अनोखा उद्घोष है। यहाँ देह कोई अश्लील प्रदर्शन नहीं, बल्कि संवादहीन दाम्पत्य, अपूर्ण दैहिक अनुभव और दमनकारी मध्यवर्गीय नैतिकता के विरुद्ध मुखर प्रतिरोध है। मित्रो की बेचैनी दरअसल उस गहरे अकेलेपन का रूप है जिसमें स्त्री विवाहिता होकर भी असंपृक्त, जीवित होकर भी अनसुनी, और पारिवारिक रूप से स्थापित होकर भी अस्तित्वगत रूप से उपेक्षित है। इस पात्र ने देह को लज्जा से मुक्त कर उसे अनुभव की भाषा बनाया। (सोबती, 2017; निल्मिणी, 2022).

मृदुला गर्ग की चित्तकोबरा में यह प्रश्न और अधिक जटिल हो जाता है, क्योंकि यहाँ देह-चेतना केवल दाम्पत्य की कमी की प्रतिक्रिया नहीं, बल्कि स्त्री-स्व की आत्म-रचना का माध्यम बनती है। नायिका का यह कहना कि वह "अपना सफर अकेले तय करूंगी" मध्यवर्गीय स्त्री की उस भीतरी यात्रा का रूपक है जिसमें प्रेम, विवाह, मातृत्व और नैतिकता के बीच उसका निजी अस्तित्व अपना अलग भूगोल मांगता है। चित्तकोबरा में अकेलापन देह-विमर्श से जुड़कर आत्म-साक्षात्कार का रूप ले लेता है। मनु के अनुभव में देह स्मृति की भी जगह है, सुख की भी, अपराध-बोध की भी, और स्वतंत्रता की भी। इसलिए यह उपन्यास मध्यवर्गीय स्त्री के भीतर छिपे उस मौन विद्रोह को सामने लाता है जिसे परंपरागत नैतिकता लंबे समय तक नामहीन बनाए रखना चाहती थी। (गर्ग, 1979; सीमा, 2019).

गीतांजलि श्री की माई में देह-चेतना का रूप कुछ भिन्न है। यहाँ देह मुखर इच्छाओं की नहीं, घरेलू श्रम, सहनशीलता, घिसटते जीवन और मौन यातना की देह है। माई का मध्यवर्गीय घर बाहर से मर्यादा का घर है, भीतर से स्त्री के क्रमिक क्षय का। नई पीढ़ी की दृष्टि माई को "एक बेचारी भर" मानती है, पर इसी सतह के नीचे उसकी दबाई हुई शक्ति, उसकी चुप आग, और उसकी इतिहास-बद्ध आत्मा मौजूद है। इस उपन्यास में अकेलापन बोलती हुई स्त्री का नहीं, चुप रहकर भी पूरे घर को उठाए रखने वाली स्त्री का अकेलापन है। यही कारण है कि यहाँ देह कोई घोषित विद्रोह न होकर सांस्कृतिक बंधनों से थकी हुई, फिर भी एक अदृश्य नैतिक ऊर्जा सँजोए देह है। (श्री, 2004; थॉमस, 2023).

स्त्री-अनुभव के इस पूरे परिदृश्य को देखने पर स्पष्ट होता है कि उत्तर-आधुनिक हिन्दी कथा में अकेलापन अब लिंग-निरपेक्ष नहीं रह जाता। वह स्त्री और पुरुष के लिए एक जैसा अनुभव नहीं है। पुरुष के लिए वह प्रायः बाहरी भूमिकाओं के विघटन से उत्पन्न होता है; स्त्री के लिए वह प्रायः संबंधों के भीतर, घर के भीतर, देह के भीतर और भाषा के भीतर जन्म लेता है। इसलिए मित्रो की प्यास, मनु की आत्म-यात्रा और माई की चुप्पी—तीनों मिलकर यह सिद्ध करती हैं कि मध्यवर्गीय अकेलेपन का आधुनिक मानचित्र स्त्री-देह को पढ़े बिना पूरा नहीं हो सकता। (सोबती, 2017).

चर्चा, विश्लेषण और परिणाम : यदि नई कहानी और उत्तर-आधुनिक कथा को एक साथ पढ़ा जाए तो अकेलेपन की तीन स्पष्ट अवस्थाएँ सामने आती हैं। पहली अवस्था में वह सामाजिक और पारिवारिक विस्थापन का मनोविज्ञान है—जैसा वापसी में दिखाई देता है। दूसरी अवस्था में वह स्मृति, इच्छा और निर्णय की भीतरी दुविधा बन जाता है—जैसा यही सच है और निर्मल वर्मा की कहानियों में है। तीसरी अवस्था में वह देह, यौनिकता, अस्मिता और आवाज़ के प्रश्न से जुड़ता है—जैसा मित्रो मरजानी, चित्तकोबरा और माई में विकसित रूप में मिलता है। इससे यह निष्कर्ष निकलता है कि हिन्दी कथा-साहित्य में मध्यवर्गीय अकेलेपन का मनोविज्ञान धीरे-धीरे बाह्य यथार्थ से

अंत:यथार्थ, और अंत:यथार्थ से दैहिक-अस्तित्वगत यथार्थ की ओर बढ़ता है। (सिंह, 2019; यादव, 2010; पचौरी, 1996).

इस अध्ययन का दूसरा महत्त्वपूर्ण परिणाम यह है कि मध्यवर्गीय नैतिकता स्वयं अकेलेपन की उत्पादक शक्ति बनती है। वही परिवार, जिसे सुरक्षा का स्थान माना जाता है, कई कृतियों में अनुशासन, निगरानी, उपयोगिता और भूमिका-निर्धारण का केंद्र बन जाता है। इसी कारण घर में रहते हुए भी पात्र असंबद्ध रहते हैं। गजाधर बाबू की वापसी, दीपा की मानसिक अस्थिरता, मित्रो की कामना, मनु की आत्म-गुत्थी और माई की चुप्पी—इन सबके केंद्र में मध्यवर्गीय मर्यादा का दबाव उपस्थित है। यह दबाव जितना संस्कार का रूप दिखता है, उतना ही मनोवैज्ञानिक दमन का भी। इसलिए साहित्यिक विश्लेषण हमें यह समझने में सहायता करता है कि अकेलापन केवल आधुनिक जीवन की दुर्घटना नहीं, बल्कि सामाजिक-सांस्कृतिक प्रशिक्षण का परिणाम भी है। (मिश्र, 2014).

तीसरा परिणाम यह है कि उत्तर-आधुनिक हिन्दी कथा में देह केवल जैविक सत्ता नहीं रह जाती; वह स्मृति का अभिलेख, प्रतिरोध का औजार, इच्छा का मुहावरा और आत्म-पहचान की जमीन बन जाती है। मित्रो मरजानी और चित्तकोबरा इस बिंदु पर निर्णायक कृतियाँ हैं, जबकि माई बताती है कि देह का मौन भी उतना ही अर्थवान है जितना उसका उद्घोष। इस प्रकार स्त्री-अनुभव और देह-चेतना ने अकेलेपन की पारंपरिक, करुण और निरुपाय छवि को बदलकर उसे एक आलोचनात्मक, आत्म-चेतस और राजनीतिक अनुभव में रूपांतरित कर दिया है। यही इस शोध का केंद्रीय निष्कर्ष है। (सीमा, 2019; निर्मिणी, 2022; थॉमस, 2023).

निष्कर्ष : हिन्दी कहानी में मध्यवर्गीय अकेलेपन का बदलता मनोविज्ञान दरअसल हिन्दी समाज के बदलते आत्मबोध का साहित्यिक दस्तावेज़ है। नई कहानी ने इस अकेलेपन को पहली बार सामाजिक मुखौटों के पीछे छिपी हुई वैयक्तिक पीड़ा के रूप में पहचाना; उत्तर-आधुनिक कथा ने उसी अनुभव को स्त्री-अनुभव, देह-चेतना, स्मृति और अस्मिता के अधिक जटिल धरातलों पर विकसित किया। इस विकास-यात्रा में अकेलापन निष्क्रिय करुणा से निकलकर आत्म-साक्षात्कार, प्रतिरोध और वैचारिक प्रश्नाकुलता में बदलता है। इसीलिए हिन्दी कथा-साहित्य को पढ़ना केवल कहानियाँ पढ़ना नहीं, बल्कि मध्यवर्गीय मन के भीतर दबे हुए इतिहास, भय, इच्छाएँ और मौन पढ़ना भी है। (मधुरेश, 2018).

अंततः कहा जा सकता है कि हिन्दी कहानी और उससे जुड़े उत्तर-आधुनिक उपन्यासों ने अकेलेपन को निरे अवसाद की तरह नहीं, बल्कि एक ऐसे अनुभव-क्षेत्र की तरह रूपायित किया है जिसमें आधुनिक मनुष्य—विशेषतः मध्यवर्गीय स्त्री—अपनी टूटी हुई आत्मा, अपनी दबी हुई देह, अपने संबंधों की थकान और अपनी अस्मिता की बेचैनी से जूझती दिखाई देती है। यही इस साहित्य की स्थायी प्रासंगिकता है, और यही इसकी बड़ी मानवीय उपलब्धि भी। (वर्मा, 2024; प्रियंवदा, 2011).

संदर्भ सूची :

1. वर्मा, निर्मल. परिन्दे. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2024.
2. वर्मा, निर्मल. कव्वे और काला पानी. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2024.
3. प्रियंवदा, उषा. ज़िन्दगी और गुलाब के फूल. नई दिल्ली, भारतीय ज्ञानपीठ, 2011.
4. भंडारी, मन्नू. यही सच है. नई दिल्ली, राधाकृष्ण प्रकाशन, 2017.
5. सोबती, कृष्णा. मित्रो मरजानी. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2017.
6. गर्ग, मृदुला. चित्तकोबरा. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 1979.
7. श्री, गीतांजलि. माई. नई दिल्ली, राजकमल प्रकाशन, 2004.

8. सिंह, नामवर. कहानी नयी कहानी. नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन, 2019.
9. मिश्र, रामदरश. हिन्दी कहानी : अंतरंग पहचान. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2014.
10. मधुरेश. हिन्दी कहानी का विकास. नई दिल्ली, लोकभारती प्रकाशन, 2018.
11. यादव, राजेन्द्र. कहानी : स्वरूप और संवेदना. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 2010.
12. पचौरी, सुधीश. उत्तर-आधुनिक साहित्यिक विमर्श. नई दिल्ली, वाणी प्रकाशन, 1996.
13. नागमणी, पोरिका. "आधुनिक हिन्दी कहानियों में मध्यवर्गीय चेतना." इंटरनेशनल जर्नल फ़ॉर मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च, खंड 2, अंक 3, मई-जून 2020, प्रकाशित 29 जून 2020.
14. थॉमस, अमला. "स्त्री विमर्श के आईने में गीतांजलि श्री का उपन्यास 'माई' : एक अध्ययन." गीना शोध संगम, विशेषांक, 5 मई 2023, पृ. 89-96.
15. सीमा. "मृदुला गर्ग के उपन्यास चितकोबरा व कठगुलाब में नारी-विमर्श." जर्नल ऑफ एडवांसेज़ एंड स्कॉलरली रिसर्चेज़ इन अलाइड एजुकेशन, खंड 16, अंक 1, जनवरी 2019, पृ. 559-561.
16. निर्ल्मिणी, अनूषा. "कृष्णा सोबती के 'मित्रो मरजानी' उपन्यास में चित्रित नारी जीवन." शोध-चिंतन पत्रिका, 2022.
17. चौहान, सरिता. "निर्मल वर्मा की कहानियाँ : अकेलेपन और ऊब का बीहड़." इंटरनेशनल जर्नल ऑफ मल्टीडिसिप्लिनरी रिसर्च एंड डेवलपमेंट, खंड 3, अंक 8, अगस्त 2016, पृ. 305-307.

•